The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | July-September 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

उत्तराखण्ड के चित्रकारों का पर्यावरण जागरूकता में योगदान

डॉ0 बिमला राणा बोरा

नियर ताम्र नगरी, माल गाँव दुगालखोला, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

ईमेल : bimla.rana.45@gmail.com

पर्यावरण का मनुष्य के जीवन से जुड़ा होना एक ऐसा महत्वपूर्ण अंग है। जिसे किसी भी स्तर पर नकारा नहीं जा सकता। जहाँ वातावरण मनुष्य के जीवन को इतना प्रभावित कर रहा है। वहाँ हमारे उत्तराखण्ड के कलाकार कैसे अछूते रह सकते है और फिर उत्तराखण्ड जैसा सुंदर प्रदेश जिसको भारत का स्वीजरलैण्ड कहा जा सकता है। जिस सौंदर्य की एक झलक पाने के लिए जिस हिमालय की चकाचौंध करने वाली सफेद धवल पर्वत मालाएं अपने प्रकाश का जादू शताब्दियों से बिखेर रही है और मैदानी इलाके के लोगों को यहां आने के लिए बाध्य करती है वातावरण और यहां के पर्यावरण के अधुणता व शुद्ध बनाए रखने की लालसा यहाँ के हर कलाकार में उदीप्त है।

उत्तराखण्ड के कलाकार में मौ० सलीम, पदमी श्री डॉ० यशोधर मठपाल, प्रो० रणवीर सिंह बिष्ट, प्रो० रणवीर सिंह सक्सेना, बी०पी० काम्बोज, प्रो० शेखर चंद्र जोशी, डॉ० कृष्णा बैराठी रघुवीर सिंह पवार, डॉ० स्वर्णलता मिश्रा, लक्ष्मी थपलियाल, नवीन वर्मा (बंजारा) आदि अपनी कला के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य को समेटे हुए है।

प्रकृति को इस प्रकार देखने का नजरिया सलीम को शायद जन्म से ही मिला है– कुमाऊँ क्षेत्र के अल्मोड़ा जैसी प्राकृतिक छटाओ, जिनमें ऊँचे भूरे हाथी व गैडे जैसे पहाड़ों तथा आकाश में घुसते हुए चीड़ों की एक विशेष भूमिका है, के बीच जन्मे सलीम और चित्रकला की शिक्षा में भी भूदृश्यों में जलरंगों के माध्यम से काम करने की विशेषज्ञता सलीम इस बात को स्वीकारते भी हैं कि चाहे वह अल्मोडा से बाहर (नौकरी व पढ़ाई के सिलसिले में) रहे बहुत दिनों तक पर कुमाऊँ का वह प्राकृतिक परिदृश्य उनसे कभी अलग नहीं हुआ।''[1]

मौ0 सलीम ने अपनी कृतियों में हरियाली के बीच चट्टाने सामाजिक विकृतियां प्राकृतिक खिलवाड़ मडराता बवडर पर्वतीय अंचल में आदि चित्रकलाओं में अपने पर्यावरण के प्रभाव या पर्वतीय प्रभाव को दर्शाया है।

चित्र–1 प्राकृतिक खिलवाड़ में मौ0 सलीम द्वारा चित्रित चित्र में दर्शाया गया है कि मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को अस्त व्यस्त कर रहा है। जैसे पेड़ों की कटाई, भूमि खनन आदि।

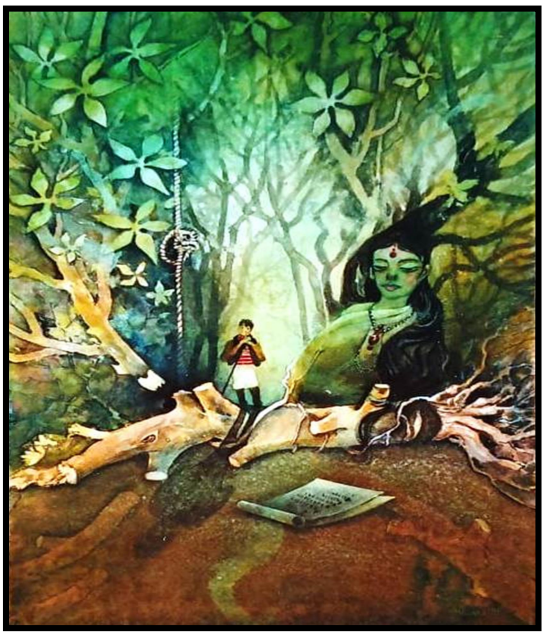

चित्र – 1 प्राकृतिक खिलवाड़

पदमश्री यशोधर मठपाल की कृतियों में उत्तराखण्ड का त्यौहार फूलदेई, घरेलू उपचार चित्र–2 पहाड़ में महिलाओं की स्थिति आदि चित्रों में पर्यावरण का प्रभाव मिलता है।

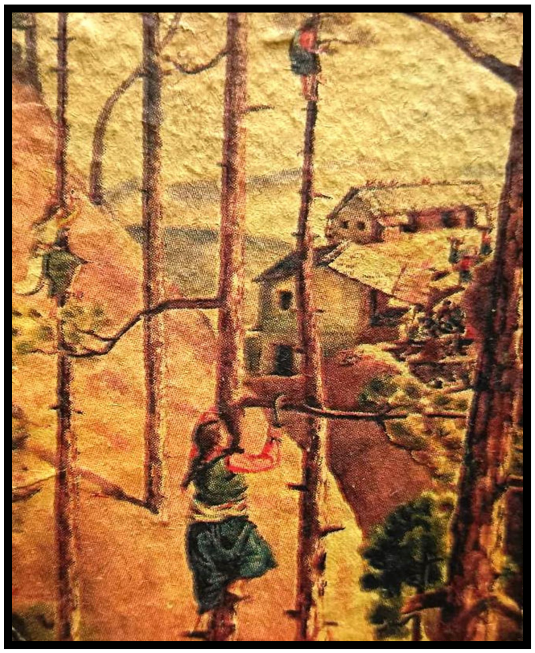

चित्र –2 पहाड़ में महिलाओं की स्थिति

प्रो० बिष्ट का प्राकृति दृश्यों के प्रति लगाव के कारण इनके अधिकांश चित्र भू दृश्य है। ''श्री बिष्ट जी के Landscaps में हिमालय की मनोरम वादियों का ही चित्रण है। इन चित्रों में झील व नदी की धरती जितनी विस्तृत है, उतना ही विस्तृत उसका आकाश है। बल्कि हम तो इस खोई हुई मनःस्थिति में पहुँच जाते हैं कि कहाँ आकाश समाप्त होता है और कहाँ धरती प्रारम्भ होती है। पता नहीं उससे एक नदी निकल रही है या उसमे समा रही है। यद्यपि श्री बिष्ट जी ने इस दृश्य को अपनी सूक्ष्म भावनाओं से पहचाना है, परन्तु राजपूत काल में ऐसे दृश्य आते हैं। इस प्रकार अनजाने में वे उस लम्बी परम्परा से अपने आप जुड़ जाते हैं और परम्परा की कड़ी न होते हुए भी एक कडी बन जाते हैं। बिष्ट जी के पर्वतों और बादलों के मूर्त और अमूर्त रूप का निरन्तर प्रतिघात चलता रहता है और इस प्रकार एक स्पन्दन दिखाई पड़ता है, उसी स्पन्दन से आकार बनते बिगड़ते है और यह हलचल सारे लैण्डस्केप से ध्वनि की तरंगों के समान धरती और आकाश पर धीरे–धीरे छाये जाती हैं। ये रंगीन रेखाएँ सारे फलक को मानो अपनी बाहों में बाँध लेना चाहती है। आकाश और धरती का ऐसा चित्रण बिष्ट जी की भारतीय मानसिकता की देन है।''[2]

''प्रो० सक्सेना की प्रकृति से निकटता ने उन्हें अन्तः कैथार्सिस के अदभुत अवसर प्रदान किये। हिमालय की उत्तुंग शिखाओं से लेकर भारत के अनेक पावन पवित्र नगरों के तीर्थ स्थल भीड़ से भरे शहर बाजार जंगलों के टेढ़े–मेढ़े रास्ते बर्फ से भरे पर्वत शिखर अनुठी पगडंडियों समुद्र के ज्वार भाटे, उमड़ते घुमड़ते बादलों के परिवर्तित रूप आदि के चित्रण इस तथ्य के प्रमाण हैं मानों सृष्टि ने उनके अन्तर्मन को झकझोर दिया हो। इसके अतिरिक्त विरासतों के रूप में ऐतिहासिक इमारतें भी उनके प्रिय चित्रण विषय रहे हैं।''[3]

काम्बोज के अनुसार – पहाड़ो में हम रहे है जिस कारण हमारा लगाव पहाड़ों से हैं इस लगाव की झलक कही न कही हमारी पेटिंग में अंदर दिखता है। समाज में जो घटित होता है। जैसे जंगलों की कटाई हो रही है, जंगल गायब हो रहे हैं, नुकसान हो रहा है पर्यावरण खराब हो रहा है। इसकी चोट कही न कही मेरे अंतर्मन के अंदर गहरा घाव बना गयी। जिस कारण बाद में हमने पर्यावरण के ऊपर नदियों के ऊपर पेंटिंग बनाई। हमारी पेटिग में कही न कही पर्यावरण से संबंधित विषय आ जा रहे हैं।

''काम्बोज के संबंध में प्रो० चिन्मय मेहता का कथन है कि काम्बोज एवं उनके चित्र समानातर होकर विकसित होते गये। जो कुछ वे कहना चाहते है उसका आधार उनकी सुस्पष्ट कला, चेतना एवं भावात्मक ईमानदारी है। इनके चित्र यक्षिया और गोवर्धनधारी द अपरुटेड कटे हुए तने आदि है।''[4] काम्बोज द्वारा अधिकांश चित्र पर्यावरण पर आधारित है।

''हिमालय इन मून एवं हिमालय इन सन नामक चित्रों की चित्रकार कृष्णा बैराठी मानव को हिमालय के समान सहनशील, संघर्षमय और विशाल बनने के लिए प्रेरित करती है।''[5]

दृश्य चित्र में प्रकृति समक्ष बैठकर तुलिका के माध्यम से हुबहु उतारने में रघुवीर सिंह पवार को महारत हासिल है। चित्र–3 उत्तरांचल नामक कृति में इनके द्वारा प्राकृतिक ग्रामीण दृश्य की झलक देखने को मिलती है।

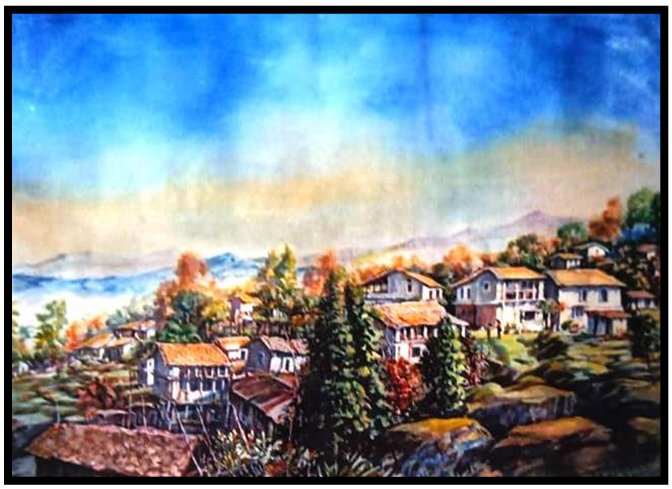

चित्र –3 उत्तराचल

प्रो० शेखर चन्द्र जोशी की कलाकृतियाँ मुख्य रूप से अपने आस–पास की प्रकृति एवं समाज से जुड़ी वस्तुओं एवं घटनाओं पर आधारित है। घसियारिन उत्तराखण्ड का संघर्ष आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इन कृतियों में उत्तराखण्ड के परिवेश की झलक दिखाई देती है।

''शेखर जोशी की सृजनशीलता को देखकर ऐसा ही लगता है। उन्होंने अपनी संस्कृति, परंपरा, पुरा कथाओं और मिथकों से लेकर प्राकृतिक सौन्दर्य और जटिल मानवीय संघर्ष, हिरोशिया और सुनामी तक को आपने अलग अंदाज में अभिव्यक्ति दी है। जोशी का कला संसार विविधता और परिवर्तन से भरा पड़ा है और उनके काम की पहचान कोई एक शैली या ब्रांड से नहीं जुड़ी है।''[6]

गुसाई का ताई जी. केदारनाथ, हेमकुण्ड कलुआ विनायक घासियारिन बजारे जुझारी, नन्दा–सुनन्दा, उत्तराखंड का संघर्ष पहाड़ और मैं आदि ऐसे अनेक चित्र है जिसमें चित्रकार ने अपने कलात्मक ज्ञान का परिचय दिया है। 'उत्तराखंड का संघर्ष' की ललित कला अकादमी नई दिल्ली ने अपने संग्राहलय के लिए चुना है चित्र –4 घास लाती महिलाएँ चित्र ग्रामीण दृश्य का है।

चित्र – 4 घास लाती महिलाएँ

उनके अनुसार मेरी अभीष्ट इच्छा है कि मैं उत्तरांचल भारत की गरिमामय प्रस्तुति का मूर्त एवं अमूर्त अंकन कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी इस कला को एक अद्भुत एवं अभूतपूर्व पहिचान दू जिसके लिए मैं अनवरत साधनारत हूँ।

डॉ० स्वर्णलता द्वारा अधिकांश चित्रों में उत्तराखण्ड का पर्वतीय प्रभाव मिलता है। ''लैंडस्केप पर लोक जीवन की परंपरा का अस्फुट सौंदर्य सहज अभिव्यक्ति दिखाई देता है। उन्मुक्त उड़ान की आकांक्षा एवं विकृत होते सामाजिक मूल्यों से जूझने का संकल्पन डॉ० स्वर्णलता के चित्रों की विशेषता है। इसके अलावा उनके चित्रों में रंगों से मानवीय परिस्थितियों पर मजबूत पकड़ रेखांकित होती है।''[7]

लक्ष्मी थपलियाल के पारिवारिक परिवेश की पृष्ठभूमि गढ़वाल है इनका कला के प्रति रुझान बचपन से ही है। पारिवारिक परिवेश में गढ़वाल होना तथा देहरादून के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में जीवन करना इनके लिए एक प्रकार कला की ओर अग्रसर होने का भय बन गया।

पर्वतीय अंचल में पले बढ़े नवीन बंजारा का जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले में हुआ। उनकी कला में कही न कही पर्वतीय प्रभाव है। इस प्रभाव को उन्होंने कैसे किया ये उनकी चित्रकला में दृश्य चित्रण में उनकी रूचि को देखकर ज्ञात होता है। जिस प्रभाव को उन्होंने अपनी चित्रकला में प्रदर्शित किया है।

अंत में हम कह सकते है कि एक चित्रकार जो धरती को अपनी जननी की दृष्टि से देखता है। वह उसके हर कण से प्यार करता है। चाहे वह कंकड़ हो, पेड़ हो, पत्ते हो, पानी हो, धूल हो, मिट्टी हो उसके लिए सब अनोखी रचनाएं है। अद्वितीय है, जिनकी वह प्रतिलिपियां बनाता है। वह उसमे अपने द्वारा विखण्डन की कल्पना भी नहीं कर सकता। उसके और प्रकृति के मध्य यही एक मधुर संबंध है।

संदर्भ

1. अनिल सिन्हा, कला दीर्घा दृश्य कला की छमाही पत्रिका, ललित कला अकादमी लखनऊ वर्ष : 2 अंक : 4 अप्रैल 2002 पृ025
2. डॉ० एस०बी०एल० सक्सेना, डॉ० आनंन्द लखटकिया, भारतीय चित्रकला परम्परा और आधुनिकता का अन्तर्द्वन्द्व, सरन प्रकाशन 40 नेहरू पार्क बरेली, पृ0149
3. डॉ० जेबा हसन, कला दीर्घा, अप्रैल 2009, वर्ष 9, अंक 18, पृ047
4. डॉ० शेखर चंद्र जोशी, समकालीन कला, अंक : 34, वर्ष नवम्बर 2007 फरवरी 2008, पृ057
5. पूर्ववत्, पृ0 58
6. दिवाकर भटट्, आधारशिला युवा चेतना की जरूरी पत्रिका वर्ष : 26 अंक 185–86, जनवरी 2011, पृ०31
7. अरुण नैथानी, समाचार पत्र, पृ०4